शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

निबंधमाला – गद्य भाग

शीर्षक :- 'गाँधी जी और मैं'

लेखक :- पंडित रामनन्दन मिश्र

प्रश्न :- ~~सन् 1947~~ गाँधीजी और मैं संस्मरणात्मक निबंध में सन् 1947 के बाद की घटनाओं का उल्लेख करें।

उत्तर :- लेखक पंडित रामनन्दन मिश्र ने सन् 1947 के बाद की घटनाओं का बड़े ही रोचक ढंग से उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि 1947-48 में गाँधीजी पटना दौरे पर आये थे और डॉ० महमूद की कोठी पर ठहरे थे। गाँधीजी के साथ ऐसे लोग थे जो रामनन्दन जी को नहीं पहचानते थे। मृदुला साराभाई गाँधीजी से परिचय कराना चाहा। देखिए ये बिहार सोशलिस्ट पार्टी के प्रधानमंत्री हैं। यह सुनकर गाँधीजी हँस पड़े। मीठे स्वरों में मृदुला की भर्त्सना करते हुए गाँधीजी ने कहा कि यह तो मेरा रामनन्दन है। सोशलिस्ट पार्टी की पूँछ लगाकर तुमने इसकी कोई इज्जत नहीं बढ़ाई है।

लेखक का कहना है कि राह अलग हो जाने पर भी गाँधीजी का प्रेम मेरे प्रति पूर्ववत था। दूसरा व्यक्ति होता तो मुझसे बात भी नहीं करता। मेरे प्रति गाँधीजी का अपना अटूट था।

लेखक एक ऐसी ही घटना का पुनः वर्णन करता है। बापू जी की जघन्य हत्या के कुछ ही दिन पहले लेखक की मुलाकात गाँधीजी से हुई थी। गाँधीजी रामनन्दन जी से कुछ अन्तरंग बातें करना चाहते थे। दूसरे दिन पाँच बजे समय निर्धारित हुआ। रामनन्दनजी समय पर पहुँच गये। लेकिन गाँधीजी पोलैण्ड के एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ निकल रहे थे। उन्होंने रामनन्दनजी को देखा तो लौट पड़े। बापू जी को दुःख हुआ कि उनके इस कार्यक्रम में किसने हेर-फेर कर दिया। इन दिनों जनश्यामदास बिड़ला उनका कार्यक्रम बनाया करते थे। बापू जी ने बिड़ला जी को हिदायत दी कि बिना उनकी राय लिये बिना मेरे कार्यक्रम में किसी भी प्रकार का हेर-फेर नहीं किया जाय।

बापूजी ने पोलैण्ड वालों से क्षमा चाही और दूसरे

शेष आगे—

दिन का समय देकर लेखक के साथ निकल पड़े।

बापूजी को अपनी पोती राधाबाई की प्रेमनिष्ठा की कहानी रामनन्दन से कहनी थी। उन्होंने बताया कि किस तरह राधाबाई और दीपक चौधरी की जब शादी होने ही वाली थी कि दीपक एकाएक बैरिस्ट्री की डिग्री लेने विलायत चला गया। लोगों ने राधा बहन को समझाया कि दीपक अब शादी नहीं करेगा। राधा अपने प्रेम पर अड़ी रही और दीपक विलायत से आया तब दोनों की शादी हो गई।

यह रामनन्दन बाबू का बापूजी के साथ अंतिम मिलन था।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सिं० महावि० सुरखसेना, पूर्णियाँ
16/09/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०—पत्र

जयद्रथ-वध

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

बोले वचन तब पार्थ उनसे लीन होकर रोष में —
"क्या निज जनों का त्राण करना सम्मिलित है दोष में?
मेरा नियम यह है, जहाँ तक मेरा बाण जायेगा,
अपने जनों को आपदा से वह अवश्य बचाएगा।

भावार्थ

प्रस्तुत पद्यांश जयद्रथ-वध के षष्ठ सर्ग से ली गई है। शत्रु पक्ष के महारथियों के वचनों को सुनकर अर्जुन क्रोध में भर जाते हैं। कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि शत्रुओं की बातों को सुनकर अर्जुन क्रोध से भर जाते हैं। क्रोध में ही वे कहते हैं कि क्या अपने लोगों की रक्षा करना पाप माना जायेगा। ऐसा मैं नहीं मानता हूँ। मेरा यह नियम है कि जहाँ तक भी मेरा बाण जा सकता है वहाँ तक वह अपने लोगों को मुसीबत से अवश्य ही बचायेगा।

कवि कहना चाहता है कि कौरवों की सेना की ओर से जो भी पाण्डवों की सेना पर आरोप लगाया जा रहा है, वह निराधार है। अर्जुन संसार सबसे श्रेष्ठ धनुर्धर है। उसे वह शक्ति प्राप्त है कि उसके धनुष से निकला हुआ बाण जहाँ तक जायेगा शत्रुओं का नाश कर देगा। अर्जुन ने तो अपना धर्म निभाया है। अपने जनों की रक्षा करना उसका परम कर्तव्य था। वह अपने कर्तव्य को निभाने में पूर्णतः सफल हुआ है। इसलिए शत्रुओं का कोई भी आरोप उचित नहीं है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
श० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

16/09/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

दिगंत - भाग - 2 पद्य भाग

शीर्षक :- 'उषा'

कवि :- शमशेर बहादुर सिंह

महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या -

"जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के उषा शीर्षक कविता से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी के महान कवि श्री शमशेर-बहादुर सिंह जी हैं। यहाँ कवि प्रातःकालीन दृश्य का मनोहारी चित्रण कर रहा है।

प्रातःकाल आकाश में जादू होता सा प्रतीत होता है जो पूर्ण सूर्योदय के पश्चात टूट जाता है। उषा का जादू यह है कि वह अनेक रहस्यपूर्ण एवं विचित्र स्थितियाँ उत्पन्न करता है। कभी पुती स्लेट, कभी गीला चौका, कभी शंख के समान आकाश तो कभी नीले जल में झिलमिलाती देह- ये सभी दृश्य जादू के समान प्रतीत होते हैं।

इस प्रकार कवि के अनुसार सूर्योदय होते ही आकाश स्पष्ट हो जाता है और 'उषा' का जादू समाप्त हो जाता है। कवि ने यहाँ प्रकृति-सौन्दर्य के लिए नये उपमानों के साथ सुन्दर चित्रण किया है। इससे कवि की भाव व्यंजना में नव सौन्दर्य आ गया है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ऊ० सं० महावि० सुरसेना, पूर्णियाँ

16/09/20